# कविता

## प्रीति शर्मा 'असीम'

नालागढ़, हिमाचल प्रदेश
ईमेल- aditichinu80@gmail.com

### बाकी है

चंद खुशियों की हसरत में बेपनाह दर्द बाकी है।
जो बीच रास्ते छोड़ दिया तुमने अभी वो साथ बाकी है।

जो तुम तक पहुंच न पाई मेरी सदायें बाकी है।
मेरे खामोश लफ्जों की हजारों बातें बाकी है।

थकी आंखों का अभी इंतजार बाकी है।
जो रूह को  सकून दे तेरा अभी दिदार बाकी है।

चंद खुशियों की हसरत में बेपनाह दर्द बाकि है।
जो बीच रास्ते छोड़ दिया तुमने अभी वो साथ बाकी है।

किस कसूर की दी है सजा अभी इल्ज़ाम बाकी है।
मौत का दे दिया फरमान अभी हमारी जान बाकी है।

सजदों में बांधी डोर की अभी वो गांठ बाकी है।
क्यों दुआएं कबूली नही गई वो फरियाद बाकी है।

चंद खुशियों की हसरत में बेपनाह दर्द बाकी है।
जो बीच रास्ते छोड़ दिया तुमने अभी वो साथ बाकी है।

हम ने अजमा लिया सब को खुदा का इम्तिहान बाकी है।
इश्क़ का यह सिला है क्यों हमारा फरमान बाकी है।

### अक्सर..... जिंदगी

अक्सर जिंदगी छीन लेती है उन हौंसले के पंख।
जो उड़ना चाहते हैं आसमान की उंचाई पर।
मापना चाहते हैं क्षितिज के पार
क्या पता हो कोई अनुपम संसार।

अक्सर जिंदगी छीन लेती है उन पैरों को।
जो नाचना चाहते थे जीवन की ताल पर।
थिरकते थे जिंदगी के हर नये ख्याल पर।।
लेकिन टूट कर रह गये अपनी ही ताल पर।

अक्सर जिंदगी छीन लेती है उन सपनों को।
जो जिंदगी ने खुलीं आंखों में सजायें।
लेकिन सपनों की हकीकत के हिस्से सिर्फ,
इन्तज़ार के बंद दरवाज़े ही आयें।।

अक्सर जिंदगी छीन लेती है उन अपनों को।
जो जिंदगी के हर अहसास में हो समायें।
लेकिन जिंदगी की हर वजह में,
बजूद न बन पायें।
जिंदगी को मार दे और मिटा भी न पायें।।
अक्सर जिंदगी छीन लेती हैं प्यार को।
प्यार के हिस्सें में सिर्फ भटकाव आयें।
जब मिला भी तो साथ रह न पायें।
नफरतों ने उम्र भर के रिश्ते निभायें।